بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 04

राह-ए-ईमान

अप्रैल
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 07.4.2023).....8
8. हुज़ूर अनवर का एक विशेष ईमान वर्धक भाषण (21 अगस्त 2022).....12
9. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....25
10. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

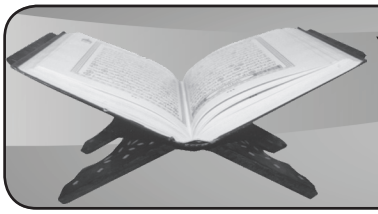

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَ زُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿۲۱۵﴾ ۔

अनुवाद:- क्या तुम ने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे जब कि अभी तक तुम पर उन लोगों जैसी कष्ट की हालतें नहीं आईं जो तुम से पहले हो चुके हैं? उन्हें दु:ख और कष्ट पहुँचे एवं उन्हें अत्यन्त भयभीत किया गया ताकि (उस समय का) रसूल एवं उस के साथ मोमिन भी पुकार उठें कि अल्लाह की सहायता कब आएगी। याद रखो कि निस्सन्देह अल्लाह की सहायता निकट ही है। (अल बक़रह - 215)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत माविया बिन हकम बताते हैं कि एक बार में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी में नमाज़ पढ़ रहा था कि नमाज़ियों में से एक आदमी को छींक आई। मैंने इसके जवाब में यरहमुकल्लाह कहा। अर्थात अल्लाह तआला तुझ पर रहम करे। दूसरे नमाज़ी मुझे तेज नज़रों से देखने लगे। मैंने कहा- हाय मेरी माँ! तुम मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो? इस पर लोग अपनी जांघें पीटने लगे जिस तरह लोग घबराहट और परेशानी में हैं। तब मैं समझा कि दरअसल ये लोग मुझे चुप कराना चाहते हैं। जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ चुके तो आपने मुझे बुलाया। मेरे माँ बाप आप पर फिदा हों। मैंने इससे पहले और न उसके बाद आपसे ज्यादा अच्छा और दयालु कोई उस्ताद देखा। ख़ुदा की क़सम! आपने न मुझे झिड़का। न मारा, न बुरा भला कहा बल्कि नरमी से कहा: नमाज़ में बातें करना ठीक नहीं। नमाज़ में तस्बीह, तकबीर और कुरआन की तिलावत होती है। मैंने कहा हुज़ूर! मैं नया नया मुसलमान हुआ हूं। अभी जाहिलियत का समय क़रीब है। अल्लाह तआला ने हमें इस्लाम की दौलत और नेअमत से सम्मानित किया है, लेकिन हम में से कुछ लोग काहिनों और ज्योत्शियों के पास जाते हैं। आपने फरमाया: तुम उनके पास न जाया करो। मैंने पूछा: हम में से कुछ लोग फाल और शगुन लेते हैं। आपने फरमाया ये बातें उनके दिलों में रची हुई हैं उनमें सख्ती नहीं चाहिए लेकिन उनकी वजह से भ्रम में पड़कर काम नहीं रुकना चाहिए।

(मुस्लिम किताबुस्सलात)

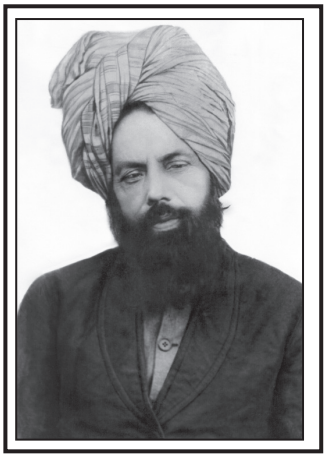

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

क़यामत के दिन हश्र कैसे होगा :- अरब साहिब ने प्रश्न किया कि क़यामत के दिन लोग जिस प्रकार मरते हैं इसी प्रकार प्रथम और अंतिम क्रमबद्ध रूप से उपस्थित होंगे या अचानक समस्त अगले और पिछले इकट्ठे उठेंगे।

फ़रमाया :- अलग-अलग सिद्ध नहीं सब इकट्ठे उठेंगे मानना पड़ता है कि हमारा ख़ुदा बड़ा समर्थवान है देखो शुक्राणु क्या चीज़ है और फिर इस से किस प्रकार पूर्ण मनुष्य बन जाता है प्रत्येक व्यक्ति जो ख़ुदा को मानने वाला है सूर्य, चंद्रमा और पिंड समूह को देख कर क्या वह बता सकता है कि किन तांगों (यक्कों) पर यह सामान आया था और उनकी सामग्री कहाँ से आई थी यही मानना पड़ेगा और पड़ता है कि

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ (यासीन : 83)

फिर हम को ऐसा ही मानना चाहिए कि क़यामत के दिन अचानक सब का मुक़ाबला करवा देगा और जिन अभिलाषाओं में मोमिन मर गए थे और उनको मालूम नहीं था कि हमारे विरोधियों का क्या हाल हुआ वह उनको दिखला दिया जाएगा कि देखो हे सत्यवानों! इंकार करने वालों का यह हाल है तब उन सत्यवादियों को आनन्द आएगा। अत: ख़ुदा को हम मान ही नहीं सकते जब तक कि उस को पूर्ण सामर्थ्यवान न मान लें। पहले उसके कार्यों को देखो हम सब को मानना पड़ता है कि उनका कोई कर्ता है फिर क्या कारण कि एक भाग में उसको मानता और एक भाग में उसका इंकार करता और संदेहों में पड़ता। या तो पहली बार से ही इनकार करना चाहिए या पूर्ण रूपेण मानना चाहिए ख़ुदा की विशेषताएं और कार्य असीमित हैं क्या संसार के हज़ारों प्राणी इस बात का पर्याप्त प्रमाण नहीं कि ख़ुदा बड़ा शक्तिशाली ख़ुदा है।

क़ब्र में प्रश्न :- अरब साहिब ने प्रश्न किया कि फ़रिश्ता मरने के बाद किस भाषा में प्रश्न करेगा?

फ़रमाया: हमें अंग्रेज़ी, फ़ारसी, अरबी, उर्दू इत्यादि भाषाओं में इल्हाम होते हैं। फ़रिश्ता प्रत्येक भाषा बोल सकता है।

प्रश्न किया कि क्या फ़रिश्ता यही पूछेगा مَنْ رَّبُّكَ وَمَنْ نَّبِيُّكَ यदि यही प्रश्न होगा तो उसके उत्तर याद कर लिए जाएं तो वहां पास हो सकते हैं।

फ़रमाया: नहीं। यह एक ईमानी (विश्वास की) बात है यही दो शब्द याद कर के दुनिया की परीक्षाओं के समान कभी पास नहीं हो सकता अपितु मनुष्य जिस रंग से रंगीन होगा (कर्मों के अनुसार) वही उत्तर उसके मूंह से निकलेगा फिर लिखा है بِوَجْهٍ مِّنَ الْوُجُوْهِ क़ब्र में आराम और दु:ख का समान दिया जाएगा।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

फिर पवित्र क़ुर्आन का तीसरा चमत्कार जो हमारी नज़रों के सामने मौजूद है उसकी वास्तविकताएं, अध्यात्मज्ञान, रहस्यात्मक तथ्य हैं जो उसकी सरस और सुबोध इबारतों में भरे हुए हैं। इस चमत्कार को पवित्र क़ुर्आन में बड़े ज़ोर-शोर से वर्णन किया गया है और फ़रमाया है कि यदि समस्त जिन्न और इन्सान इकट्ठे होकर उसके जैसा बनाना चाहें तो उनके लिए संभव नहीं। यह चमत्कार इस तर्क से सिद्ध और प्रमाणित है कि इस युग तक जिसको कि 13 सौ वर्ष से अधिक गुज़र रहे हैं बावजूद इसके कि पवित्र क़ुर्आन की मुनादी दुनिया की हर दिशा में हो रही है और बड़े ज़ोर से 'हल मिन मुआरिज़' (है कोई मुक़ाबला के लिए) का नगाड़ा बजाया जाता है परन्तु कहीं किसी ओर से आवाज़ नहीं आई। तो इससे इस बात का स्पष्ट सबूत मिलता है कि समस्त मानवीय शक्तियाँ पवित्र क़ुर्आन का मुकाबला करने से असमर्थ हैं अपितु यदि पवित्र क़ुर्आन की सैकड़ों ख़ूबियों में से केवल एक ख़ूबी को प्रस्तुत कर के उसका उदाहरण माँगा जाए तो इन्सान, जिसकी बुनियाद ही कमज़ोर है, से यह भी असंभव है कि उस एक भाग का उदाहरण प्रस्तुत कर सके। उदाहरणतया पवित्र क़ुर्आन की ख़ूबियों में से एक यह भी ख़ूबी है कि वह समस्त धार्मिक ज्ञानों पर आधारित है तथा कोई धार्मिक सच्चाई जो सत्य और दूरदर्शिता से संबंध रखती है ऐसी नहीं जो पवित्र क़ुर्आन में न पाई जाती हो परन्तु कौन ऐसा व्यक्ति है कि कोई दूसरी ऐसी किताब दिखाए जिसमें यह विशेषता मौजूद हो? और यदि किसी को इस बात में सन्देह हो कि पवित्र क़ुर्आन समस्त धार्मिक सच्चाइयों का संग्रहीता है तो ऐसा सन्देहकर्ता चाहे ईसाई हो, चाहे आर्य, चाहे ब्रह्म हो और चाहे नास्तिक अपने तौर तरीक पर परीक्षा कर के अपनी संतुष्टि करा सकता है ओर हम संतुष्ट करने के ज़िम्मेदार हैं। बशर्ते कि कोई सत्याभिलाषी हमारी और रुजू करे। बाइबल में जितनी पवित्र सच्चाइयां हैं या फिलास्फ़रों की पुस्तकों में जितनी सत्य और दूरदर्शिता की बातें हैं जिन पर हमारी नज़र पड़ी है या हिन्दुओं के वेद इत्यादि में जो संयोग से कुछ सच्चाइयां दर्ज हो गई हैं या शेष रह गई हैं जिनको हमने देखा है या सूफ़ियों की सैकड़ों पुस्तकों में जो दूरदर्शिता और अध्यात्मज्ञान के रहस्य हैं जिन पर हमें सूचना मिली है उन सबको हम पवित्र क़ुर्आन में पाते हैं और इस पूर्ण अनुभव से जो विगत तीस वर्ष से अत्यन्त गहरी और व्यापक दृष्टि के द्वारा हमको प्राप्त है बहुत अटल विश्वास से हम पर यह बात स्पष्ट हो गई है कि कोई रूहानी सच्चाई जो अंतर्मन की पूर्ति, मानसिक तथा हार्दिक शक्तियों के प्रशिक्षण के लिए प्रभाव रखती है ऐसी नहीं है जो पवित्र क़ुर्आन में मौजूद न हो और यह केवल हमारा ही अनुभव नहीं अपितु यही पवित्र क़ुर्आन का दावा भी है जिसकी आज़मायश न केवल मैंने की अपितु हज़ारों उलमा प्रारंभ से करते आए और उसकी सच्चाई की गवाही देते आए हैं।

फिर पवित्र क़ुर्आन का चौथा चमत्कार उसके रूहानी प्रभाव हैं जो हमेशा उसमें सुरक्षित चले आते हैं अर्थात् यह कि उसका अनुकरण करने वाले ख़ुदा तआला की स्वीकारिता की श्रेणियों को पहुँचते हैं और ख़ुदा के वार्तालाप से सम्मानित किए जाते हैं। ख़ुदा तआला उनकी दुआओं को सुनता और उन्हें प्रेम तथा दया पूर्वक उत्तर देता है और कुछ परोक्ष के रहस्यों पर नबियों की तरह उनको अवगत करता है और अपने समर्थन और सहायता के निशानों से दूसरी प्रजातियों से उन्हें अलग करता है। यह भी ऐसा निशान है कि जो क़यामत तक उम्मत-ए-मुहम्मदिया में क़ायम रहेगा और हमेशा प्रकट होता चला आया है और अब भी मौजूद और प्रमाणित है। मुसलमानों में से ऐसे लोग अब भी दुनिया में पाए जाते हैं कि जिनको अल्लाह तआला अपने विशेष समर्थनों से समर्थित करके सही और सच्चे इल्हामों तथा ख़ुशख़बरियों और ग़ैबी कश्फों से गौरवान्वित करता है।

अब हे सत्याभिलाषियो और सच्चे निशानों के भूखो और प्यासो! इन्साफ़ से देखो और थोड़ी पवित्र दृष्टि से विचार करो कि जिन निशानों का ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया है किस उच्च श्रेणी के निशान हैं और कैसे हर युग के लिए मशहूद (देखे हुए) और महसूस (अनुभव किए हुए) का आदेश रखते हैं। पहले नबियों के चमत्कारों का अब नाम व निशान शेष नहीं केवल क़िस्से हैं ख़ुदा जाने उनकी वास्तविकता कहाँ तक सही है। विशेष तौर पर हज़रत मसीह के चमत्कार जो इन्जीलों में लिखे हैं किस्सों और कहानियों के रंग में होने के बावजूद तथा बहुत सी अतिश्योक्तियों के बावजूद जो उनमें पाई जाती हैं। उन पर ऐसे संदेह और शंकाएं आती हैं कि जिनसे उन्हें पूर्णतया साफ़ और पवित्र कर के दिखाना बहुत कठिन है। यदि हम कल्पना के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि जो कुछ प्रचलित इन्जीलों में हज़रत मसीह के बारे में बयान किया गया है कि लूले और लंगड़े और लकवाग्रस्त तथा अंधे इत्यादि बीमार उनके छूने से अच्छे हो जाते थे। यह समस्त वर्णन अतिश्योक्ति के बिना है और प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ है कोई और अर्थ उसके नहीं। तब भी हज़रत मसीह की इन बातों से कोई बड़ी ख़ूबी नहीं सिद्ध होती। प्रथम तो उन्हीं दिनों में एक तालाब भी ऐसा था कि उसमें एक विशेष समय में ग़ोता मारने से ऐसे सब रोग तुरन्त दूर हो जाते थे जैसा कि स्वयं इंजील में वर्णन है फिर इसके अतिरिक्ति लम्बे समय के अन्वेषणों से इस बात को सिद्ध कर दिया है कि रोगों को समाप्त करने की महारत बहुत सी विद्याओं में से एक विद्या है जिसके अब भी बहुत लोग शौकीन पाए जाते हैं। जिसमें अत्यन्त ध्यान तथा मानसिक शक्तियों के व्यय करने और विचार के आकर्षण का प्रभाव डालने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। अत: इस विद्या का नुबुव्वत से कुछ संबंध नहीं अपितु सदाचारी पुरुष होना भी इसके लिए आवश्यक नहीं और सदैव से ये विद्या प्रचलित होती चली आई है। मुसलमानों में कुछ बुज़ुर्ग लोग जैसे मुहियुद्दीन (इब्न) अरबी साहिब फ़ुसूस और कुछ नक्शबंदियों के बुज़ुर्ग इस काम में अभ्यस्त गुज़रे हैं। ऐसे कि उनके समय में उनका उदाहरण नहीं पाया गया अपितु कुछ के बारे में वर्णन किया गया है कि वे अपने पूर्ण ध्यान से ख़ुदा तआला के आदेश से ताज़ा मुर्दों से बातें कर के दिखला देते थे। (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब- 37-41)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

रमज़ान के बाद क्या ??

अल्लाह का शुक्र है कि रमज़ान आया और जितना भी हो सका हमें नेक काम करने की तौफीक मिलती रही अब रमज़ान खतम होने वाला है तो क्या रोज़ा रखने वाला रमज़ान के बाद उसी हालत में रहता है जिस हालत में वह रमज़ान के दौरान था? या वह उस औरत की तरह करता है जो सूत कातती है और फिर उसे तोड़ देती है? वह मुसलमान जो रमज़ान के महीने में रोज़ा रखने वाला, बाजमात नमाज़ पढ़ने वाला, क़ुरआन की तिलावत करने वाला, सदका देने वाला, रात में उठ उठ कर तहज्जुद पढ़ने वाला था

अब क्या वह रमज़ान के बाद भी उसी हालत में रहेगा या वह दूसरे रास्ते यानी शैतान के रास्ते पर चल पड़ेगा और ऐसे काम करने लगेगा जो अल्लाह के क्रोध का कारण बनेंगे??? यह हम सब के लिए दो मिनट ठहर कर सोचने की बात है। बेशक रमज़ान के बाद मुसलमान का नेक कामों पर चलते रहना और उसी हालत पर बाक़ी रहना उसके रमज़ान उल-मुबारक के रोज़े क़बूल होने की एक अलामत है और रमज़ान उल-मुबारक के बाद नेक कामों को छोड़ देना और शैतान के रास्तों पर चलना ज़िल्लत व रुसवाई है, और खुदा की रहमत से दूर जाने वाली बात है।

ताज्जुब की बात है कि कुछ लोग रमज़ान के महीने में रोज़ा रखते हैं और अल्लाह की राह में सदक़ा करते हैं और उस की हर तरह से इताअत करने की कोशिश करते हैं, लेकिन रमज़ान का महीना गुज़रते ही उनका स्वभाव बदल जाता है और उनका व्यवहार अपने रब के साथ वैसा नहीं राहत। हम देखते हैं कि वह न तो नमाज़ और तहज्जुद पढ़ते हैं और न नेक कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, सच बोलने की आदत भी छूट जाती है और कई तरह से खुदा की नाफरमानी करने लगते हैं।

यह बात तो बहुत गलत है कि हम अल्लाह तआला को सिर्फ रमज़ान में ही पहचानें। एक मुसलमान के लिए रमजान के बाद जीवन का एक नया पृष्ठ खुलना ज़रूरी है जिसमें वह आइंदा भी तौबा करता रहे और अल्लाह तआला की ओर लौटता रहे, पाँच नमाजों को बड़ी पाबंदी से अदा करता रहे। रमज़ान में अगर तिलवात कुरान करता था तो कमसे कम दिन में एक बार अब भी तिलवात ज़रूर करे। अगर हम अपनी नज़रों को नीचा रखते थे यह सोच कर कि बदनज़री से खुदा नाराज़ होता है तो रमज़ान के बाद भी इस का पालन करें।

दरअसल रमज़ान एक प्रेक्टिस का महीना है इस महीने में खुदा तआला की तरफ से हमें खास ताक़त मिलती हैं ताकि हम अच्छे से प्रेक्टिस कर सकें और फिर जब रमज़ान खतम हो तो सारा साल उन नेकियों को करते रहें और रमज़ान में जिन बुरे कामों को हमने छोड़ा है उनसे सारी साल ही दूर रहें। झूठ जो सारे गुनाहों की जड़ है रमज़ान में हम झूठ नहीं बोलते तो हमें चाहिए कि इस अच्छी आदत को हमेश जारी रखें और झूठ से बचें।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक दे कि हम रमज़ान वाली नेकियों को सारा साल करते रहें और खास तौर पर पाँच नमाजों को पाबंदी से मस्जिद में जाकर अदा करें आमीन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

मुनाजात और तब्लीग़ो हक़

ऐ ख़ुदा ऐ कारसाज़[1] ओ ऐब[2] पोश[3] ओ किरदगार[4]
ऐ मेरे प्यारे मेरे मुहसिन[5] मेरे परवरदिगार[6]
किस तरह तेरा करूँ ऐ जुलमिनन[7] शुकर ओ सिपास[8]
वह ज़ुबान लाऊँ कहाँ से जिससे हो ये कारोबार
बदगुमानों[9] से बचाया मुझ को ख़ुद बन कर गवाह
कर दिया दुश्मन को इक हमले से मग़लूब[10] ओ ख़्वार[11]
काम जो करते हैं तेरी राह में पाते हैं जज़ा[12]
मुझ से क्या देखा के यह लुत्फ़ ओ करम[13] है बार-बार
तेरे कामों से मुझे हैरत है ऐ मेरे करीम !
किस अमल पर मुझ को दी ह खिल्लते[14] कुरब ओ जवार[15]
किरम[16] खाकी हूँ मेरे प्यारे न आदम ज़ाद हूँ
हूँ बशर की जाए नफ़रत और इन्सानों की आर[17]
यह सरासर फ़ज़ल ओ एहसान है कि मैं आया पसन्द
बरना दरगाह[18] में तेरी कुछ कम न थे ख़िदमत गुज़ार[19]
दोस्ती का दम जो भरते थे वह सब दुश्मन हुए
पर ना छोड़ा साथ तूने ऐ मेरे हाजत बरार[20]
ऐ मेरे यारे यगाना ऐ मेरी जाँ की पनाह
बस है तू मेरे लिए मुझ को नहीं तुझ बिन बकार
मैं तो मर कर ख़ाक होता गर न होता तेरा लुत्फ़
फिर ख़ुदा जाने कहाँ यह फेंक दी जाती ग़ुबार[1]

(ब्राहीन अहमदिया भाग 5, पृ. 97 प्रकाशन 1908 ई. रूहनी ख़ज़ायन भाग 21, पृ.127-152)

---

1. काम बनाने वाला। 2. बुराई। 3. छुपाना। 4. ख़ुदा तआला। 5. उपकार करने वाला। 6. ख़ुदा (पालनहार)। 7. इहसान करने वाला। 8. शुक्रिया। 9. बुरा चाहने वाला। 10. परास्त। 11. अपमानित। 12. बदला। 13. प्यार तथा उपकार। 14. उपाधि, वस्त्र। 15. सानिध्व। 16. मिट्टी के कीड़े की तरह। 17. शर्म। 18. चौखट। 19. सेवक। 20.मुरादें पूरी करने वाला। 21. धूल/मिट्टी।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 07.4.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम की श्रेष्टता, महत्ता, स्तर एवं महानता का बयान।
विरोधियों के उपद्रव से सुरक्षित रहने, विश्व की सामान्य स्थिति तथा फिलिस्तीन के मुसलमानों के लिए रमज़ानुल मुबारक में दुआओं की तहरीक।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:-

अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दीन तथा शरीअत को सम्पूर्ण एवं पूरा किया तो क़ुर्आन करीम में यह घोषणा फ़रमाई-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

कि आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी अनुकम्पा पूरी कर दी तथा मैंने इस्लाम को तुम्हारे लिए पसन्द कर लिया। अतएव यह अल्लाह तआला का मुसलमानों पर अति उपकार है कि उनके लिए एक सम्पूर्ण एवं व्यापक शरीअत प्रदान की। यह दावा केवल इस्लाम का है, किसी अन्य धर्म का नहीं कि अब अन्तिम दीन इस्लाम ही है जो अल्लाह तआला का पसन्दीदा दीन है तथा यदि अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहिए तो इस्लाम को स्वीकार किए बिना, इसकी शिक्षानुसार अमल किए बिना कोई चारा नहीं। अल्लाह तआला यह ऐलान फ़रमा रहा है कि क़ुर्आन की शिक्षा ही है जो अब इंसान की नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का अकेला साधन है बल्कि यह शिक्षा इतनी व्यापक है कि भौतिक प्रगति के रास्तों के लिए भी यही शिक्षा है।

जब अल्लाह तआला इस शिक्षा के सम्बंध में اَكْمَلْتُ की घोषणा फ़रमाता है तो इसका अर्थ यह है कि इंसान की समस्त क्षमताएँ, चाहे वे नैतिक हों, आध्यात्मिक अथवा शारीरिक हों, इनकी प्राप्ति क़ुर्आन करीम पर अमल करने से ही हो सकती है तथा اَتْمَمْتُ कह कर यह घोषणा पूरी शक्ति से फ़रमा दिया कि जो कुछ

भी इंसान की आवश्यकताएँ थीं उनको हर दृष्टि से पूरा करने वाला केवल क़ुर्आन करीम ही है, कोई ऐसी आवश्यकता नहीं जिसको क़र्आन करीम अपनी परिधि में न लाया हो, वे इंसान की भौतिक आवश्यकताएँ हों या रूहानी तथा नैतिक स्तरों को प्राप्त करने के साधन एवं रीतियाँ हों।

इस आयत के साथ ही क़ुर्आन करीम ने यह ऐलान फ़रमा दिया कि अब इंसान का अस्तित्व इस शिक्षा के साथ ही संयुक्त है तथा यह शिक्षा पूरे युग तथा दुनिया के समस्त इंसानों के लिए है और क़ुर्आन करीम से पहले नाज़िल होने वाली समस्त शिक्षाएँ जो विभिन्न नबियों पर उतरीं, वे सामयिक तथा उस ज़माने की आवश्यकता के अनुसार थीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसकी व्याख्या के लिए यह भी ऐलान फ़रमाया कि इससे यह साबित होता है कि आँहज़रत स. की नियुक्ति का उद्देश्य भी पूरा हो गया तथा आप स. ही वे सम्पूर्ण एवं अन्तिम नबी हैं जिन पर यह उच्चतम स्तर की शरीअत अवतरित हुई। आपत्ति कर्ता आपत्तियाँ करते हैं कि जब यह आस्था है तथा क़ुर्आन करीम को अन्तिम शरीअत और आँहज़रत स. को अन्तिम नबी मानते हैं तो फिर आप अलै. के दावों का क्या औचत्य है तथा आप अलै. के इस ज़माने में आने की आवश्यकता ही क्या थी? तो इसका उत्तर आप अलै. ने एक स्थान पर इस प्रकार भी बयान फ़रमाया है कि यदि तुम इस्लाम की शिक्षानुसार कर्म कर रहे होते तो फिर ठीक है मेरे आने की कोई आवश्यकता नहीं थी परन्तु ज़माने की साधारणत: तथा विशेषकर मुसलमानों की अपनी अवस्था इस बात की घोषणा कर रही है कि किसी अध्यापक की आवश्यकता है।

आप अलै. ने अपने लिट्रेचर, लेखों तथा पुस्तकों में हर स्थान पर यह फ़रमाया है कि मैं आँहज़रत स. की गुलामी में आप स. की शरीअत तथा दीन एवं क़ुर्आन की शिक्षाओं को दुनिया में फैलाने के लिए आया हूँ। यही काम है जो अहमदिया जमाअत आप अलै. के दिए हुए लिट्रेचर तथा आप अलै. की बयान की हुई क़ुर्आन की व्याख्या के अनुसार कर रही है तथा इस बात पर हर अहमदी को विचार करना चाहिए कि इस उद्देश्य को हम किस सीमा तक पूरा कर रहे हैं। सामूहिक दृष्टि से तो एक प्रोग्राम हैं तथा हो रहे हैं किन्तु व्यक्तिगत रूप में भी होने चाहिएँ। अत: हमारी बैअत का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब हम इस उद्देश्य को सम्मुख रखेंगे। इसके लिए हमें क़ुर्आन करीम को पढऩे तथा समझने की ओर सदैव ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए अति उत्तम साधन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें एवं उपदेश हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- क़ुर्आन करीम की सुन्दरता एवं विशेषताएँ मैं कुछ समय से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथनों की रौशनी में बयान कर रहा हूँ। आज भी क़ुर्आन करीम की सम्पूर्णता के विषय में आप अलै. के उपदेश शिक्षा की सम्पूर्णता पर पेश करूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- दस बैअत की शर्तों में भी यह बात शामिल है कि क़ुर्आन करीम की हुकूमत को पूर्णत्या अपने सिर पर क़बूल करूँगा। अत: यदि हममें से हर एक इस रमज़ान में इस निर्देश के अनुसार कर्म करने का निर्णय कर ले तो न केवल हम अपनी रूहानियत में उन्नति करने वाले होंगे अपितु हमारा समाज भी जन्नत की उपमा वाला समाज बन जाएगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. के हवाले से फ़रमाया कि जो कुछ मानव प्रकृति में चरम सीमा तक बिगाड़ हो सकता है तथा जितनी गुमराही एवं बुरे कर्मों में वे आगे से आगे बढ़ सकते हैं उन समस्त बुराईयों का क़ुर्आन करीम के द्वारा सुधार किया गया है। इस लिए ऐसे समय पर उसने क़ुर्आन करीम को नाज़िल किया जब मानव जाति में ये सारी बुराईयाँ पैदा हो गईं थीं तथा धीरे धीरे मानवीय स्थिति हर एक आस्था एवं बुरे कर्म में लिप्त हो चुकी थी तथा यही अल्लाह की हिकमत चाहती थी कि ऐसे समय पर इस सम्पूर्ण कलाम का अवतरण हो, क्यूँकि बुराईयों के जन्म लेने से पहले ऐसे लोगों को इन दोषों एवं बुरी आस्थाओं की सूचना देना कि वे इनसे पूर्णत: अपरिचित हैं, उनके गुनाहों की ओर स्वयं झुकाव पैदा करने का काम देता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अतएव ज्ञान एवं विवेक वाले, एक साधारण व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकते। जो कलाम ख़ुदा का कलाम हो उसका मानवीय कलाम से उच्चतर होना आवश्यक है। अल्लाह का ज्ञान कदाचित मानवीय कलाम के समान नहीं हो सकता। अत: क़ुर्आन करीम का हर एक दृष्टि से सम्पूर्ण होने का दावा है तथा कोई इसके मुक़ाबले पर न कभी हुआ है और न हो सकता है। जिन्होंने इस पवित्र कलाम का आज्ञा पालन किया है उन्हीं में इसके प्रभाव प्रकट हो सकते हैं। अत: यह भी क़ुर्आन की शिक्षा की विशेषता है कि इसके अनुसार कर्म करने वाले ही मूल्यवान बरकतों को प्राप्त करने वाले हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि फुर्कान मजीद ने अपनी सुगमता एवं समृद्धता को सत्यता एवं यथार्थ आवश्यकता की व्यवस्था से अवगत किया है। समस्त दीन की सच्चाईयों को अपनी परिधि में लेकर दिखाया है। इसमें हर एक विरोधी के लिए खुली खुली सच्चाईयाँ भरी पड़ी हैं। जिन बातों में बिगाड़ देखा उन्हीं के सुधार के लिए ज़ोर मारा है। विभिन्न प्रकार की बीमारियों का इलाज लिखा है। झूठे धर्मों के हर एक भ्रम को मिटाया है, हर एक आपत्ति का जवाब दिया है। कोई सच्चाई ऐसी नहीं जिसको बयान नहीं किया। कोई कलमा अनावश्यक नहीं लिखा। कोई बात नहीं जो अवसर से हट कर बयान की हो। कोई शब्द व्यर्थ बयान नहीं हुआ। समृद्ध भाषा को इस कमाल तक पहुंचाया कि उसका ज्ञान पहले वालों तथा अन्त में आने वालों तक के लिए इस किताब में भर दिया। इसकी शिक्षा ऐसी है जिसकी व्याख्या हर ज़माने के अनुसार ज्ञान देती है। क्या कभी किसी ने ऐसी किताब देखी है जो थोड़ से शब्दों में ज्ञान का सागर बहा दे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर धर्म को चेलेंज दिया कि आओ इसकी विशेषताएँ तुम्हें दिखाऊँ और आज तक किसी ने इस चुनौती का जवाब नहीं दिया। इसके बावजूद हम अहमदियों पर अनादर करने का आरोप लगाया जाता है। फ़रमाया कि हमारी दृष्टि में मोमिन वही है जो क़ुर्आन करीम का सम्पूर्ण अनुकरण करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि मुक्ति के लिए अल्लाह तआला ने बार बार बयान फ़रमाया है कि सबसे पहले अल्लाह तआला को एक अकेला समझे, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी माने, क़ुर्आन करीम को अल्लाह की किताब समझे। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने क़ुर्आन की वह्यी की शान के विषय में फ़रमाया कि सुनो ख़ुदा की धिक्कार है उन पर जो दावा करें कि वे क़ुर्आन के जैसी किताब ला सकते हैं। क़ुर्आन करीम चमत्कार है जिसके बराबर कोई इंसान और जिन्न नहीं ला सकता तथा इसमें वे ब्रह्मज्ञान एवं विशेषताएँ जमा हैं जिन्हें मानवीय ज्ञान जमा नहीं कर सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया- यदि मेरे साथ कोई निशान, समर्थन शामिल न होता, यदि मैंने क़ुर्आन करीम से अलग हट कर रास्ता निकाला होता अथवा कोई बात इसमें अपनी ओर से शामिल की होती या निरस्त की होती अथवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अलग कोई राह निकाली होती तो लोगों की आपत्ति उचित होती कि यह व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुश्मन और क़ुर्आन का दुश्मन है। अब मैंने न कोई बदलाव क़ुर्आन में किया तथा न पहली शरीअत की कोई मात्रा बदली बल्कि मैं क़ुर्आन तथा क़ुर्आन के आदेशों की और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र धर्म की सेवा के लिए तत्पर हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. का दावा है, जिस पर हम विश्वास रखते हैं कि आप अलै. के द्वारा ही क़ुर्आन करीम की शिक्षाएँ हम तक पहुंची हैं और आप अलै. ने हमें वास्तविक ज्ञान प्रदान किए हैं। उन लोगों को विचार करना चाहिए कि जमाअत पर आरोप लगाते हैं। ये लोग जो बाज़ (रुक जाना) नहीं आ रहे हैं अल्लाह तआला इन्हें पकड़े बिना नहीं छोड़ेगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. के लेखों से क़ुर्आन करीम के न्याय स्थापित करने के विषय में आदेशों पर प्रकाश डाला और फ़रमाया कि ये नियम दुनिया के अमन की ज़मानत हैं। सांसारिक युद्धों में लिप्त राष्ट्र इस नियम को समझ लें तो शांति स्थापित हो सकती है। यदि न्याय स्थापित नहीं करेंगे तो निवाश निश्चित है।

क़ुर्आन करीम की सम्पूर्ण शिक्षा का ऐलान करके हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने यह घोषणा फ़रमाई कि यदि क़ुर्आन के मुक़ाबले पर कोई सच्चाई जो इसमें मौजूद न हो, वह दिखा दे अथवा कोई सच्चाई जो किसी अन्य किताब में इससे अच्छी बयान हुई हो, हमें दिखा दे तो हम मृत्यु दंड स्वीकार करने के लिए तय्यार हैं। आज क़ुर्आन ही दुनिया में एक अकेला ख़ुदा का कलाम है जिसमें एकेश्वरवाद तथा अल्लाह तआला की प्रतिष्ठा तथा उसके एक अकेला होने की आस्था सम्पूर्ण रूप में मौजूद है और क़ुर्आन ख़ुदा पर कोई आरोप नहीं लगाता तथा जबरन कोई शिक्षा नहीं मनवाता तथा लोगों के कथनी करनी में जो बिगाड़ हैं उनका सुधार करता है तथा हर उपद्रव की रोक थाम उसी प्रकार करता है जिस प्रकार वह फैला होता है।

हुज़ूरे अनवर ने दुआ की, कि अल्लाह हमें क़ुर्आन को सही रूप मे पढऩे, समझने तथा अपनी जीवन शैलियों में लागू करने की तौफीक़ अता फ़रमाए और रमज़ान के बाद भी हम क़ुर्आन से ऐसे ही लाभान्वित होने वाले हों जैसे हम रमज़ान में प्राप्त करते हैं।

ख़ुत्ब: जुम्अ: के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने रमज़ान में दुआओं की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि जमाअत के विरोधियों के उपद्रव से बचने के लिए विशेष रूप से दुआएँ करें। अल्लाह तआला हर एक उपद्रवी के हाथ को रोके तथा उनकी पकड़ के सामान फ़रमाए तथा दुनिया की सामान्य स्थिति और फलिस्तीन के मुसलमानों के लिए भी विशेष दुआओं की प्रेरणा दी कि अल्लाह तआला उनको दुष्टों के अत्याचार से बचाए।

☆ ☆ ☆

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का विशेष ईमान वर्धक भाषण

जलसा सालाना जर्मनी 21 अगस्त 2022 ई. के अंतिम इज्लास के अवसर पर, इस्लामाबाद, टिलफ़ोरड, यू.के

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

हक़ीक़ी अमन उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक एक बाला हस्ती को स्वीकार न किया जाए

यह अक़ीदा कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से सिर्फ इस्लाम ने ही प्रस्तुत किया है

"हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीपों के रहने वालो कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को खंडर पाता हूँ।" (हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

ऐसे में अगर कोई उम्मीद की किरण है, अमन की ज़मानत है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन-ओ-सलामती की तालीम के साथ दुनिया में भेजा था, जो शहनशाह-ए-अमन है जो अल्लाह तआला को सब इन्सानों से ज़्यादा प्यारा है, जिस पर अल्लाह तआला की आख़िरी कामिल और मुकम्मल शरीयत उतरी, जिसकी तालीम प्यारो मुहब्बत की तालीम है

हक़ीक़ी अमन तभी होगा जो व्यक्तिगत, ख़ानदानी, नसली, क़ौमी, मुल्की तर्जीहात से बाला हो कर क़ायम करने की कोशिश की जाए

एक मर्कज़ी केंद्र की प्राप्ति के लिए कोशिश की जाए और यह उसी सूरत में हो सकता है जब इन्सान इस बात को समझ ले और उसका फ़हम-ओ-इदराक पैदा कर ले कि

मेरे ऊपर एक बाला हस्ती है जो मेरे लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त दुनिया के लिए अमन चाहती है।

अल्लाह तआला ने अपने नूर, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और क़ुरआन-ए-करीम जो रोशन किताब और समस्त उलूम-ओ-मआरिफ़ का स्रोत और हिदायत का नूर है और सलामती का पैग़ाम है, को भेज कर इन्सानियत पर बहुत बड़ा एहसान किया है, अगर इन्सान इससे फ़ायदा न उठाए और अपनी नष्ट करने वाली स्वार्थ परायणता के लोभों की ही कैद में रहे तो इस से बड़ी बदक़िस्मती और क्या हो सकती है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के साथ जुड़ना भी ज़रूरी है, तभी आध्यात्क ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है आज यह काम मसीह मौऊद की जमाअत के सपुर्द

किया गया है, अगर हमने भी घरेलू सतह से ले कर अंतरराष्ट्रीय सतह तक उसके मुताबिक़ अपना किरदार अदा न किया तो हमारे अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत नहीं है

हमारे विरोधी जो भी चाहे सोचें और करें, हमारा काम है कि अगर हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम को अपनाएं और दुनिया में फैलाएं और दुनिया को बताएं कि आज दुनिया की अमन-ओ-सलामती का यही एक हल है, अत: आओ और अमन-ओ-सलामती की तालीम देने वाले इस महान हस्ती से जुड़ कर दुनिया-ओ-आख़िरत में अपनी सलामती के सामान कर लो

अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी भाईचारा पैदा न हो और हक़ीक़ी भाईचारा एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने वाली पूर्ण शरीयत में आपकी तालीमात की रोशनी में वास्तविक और स्थाई विश्व शांति के क़ियाम के विषय में वर्णन

जमाअत के लोगों को अपना किरदार इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार ढालते हुए दुनिया के लिए अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने का उपदेश

अल्लाह तआला का बहुत बहुत धन्यवाद है कि उसने दुनिया के आजकल के हालात के बावजूद जमाअत अहमदिया जर्मनी को अपना जलसा सालाना आयोजित करने का सामर्थ्य प्रदान किया और पिछले वर्ष के मुक़ाबले में बड़े इंतेज़ामात के साथ आप यह जलसा आयोजित कर रहे हैं। पहले covid की महामारी ने दुनिया को परेशान किया और अभी वह महामारी की परेशानी ख़त्म नहीं हुई तो अब दुनिया में जंगों की परिस्थिति ने दुनिया को एक अत्यंत भयानक मोड़ पर ला कर खड़ा कर दिया है। दुनिया का कोई भाग भी इस अनुमानित तबाही से सुरक्षित नज़र नहीं आता और जब तक एक ख़ुदा की ओर रुजू नहीं करेंगे तबाही से बच भी नहीं सकते।

पहले तो यूरोप और पश्चिमी देश और प्रगति प्राप्त देश इस भ्रम में बैठे हुए थे कि जंगों की सूरत-ए-हाल, फ़साद की सूरत-ए-हाल, इलाक़ों और मुल्कों की तबाही के हालात जहां पैदा हुए हैं या हो रहे हैं वे हमसे हज़ारों मील दूर हैं और हम महफ़ूज़ हैं। हालात ख़राब हैं, बम पड़ रहे हैं, लोग मर रहे हैं, औरतें विधवा हो रही हैं, बच्चे यतीम हो रहे हैं, लोग अपाहिज हो रहे हैं तो वह एशिया में और मध्य पूर्व एशिया में और ग़रीब देश में हो रहे हैं, हमें क्या फ़र्क़ पड़ता है। प्रगति प्राप्त देश इन देशों को हथियार उपलब्ध कराते रहे कि हमारे हथियार बिकते रहें। ये मरते हैं तो मरें, क्या फ़र्क़ पड़ता है। लेकिन भूल गए कि यह परिस्थितियाँ उन पर भी आ सकती हैं और अपनी तरक़्क़ी के भ्रम में उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई और आँखें अंधी हो गईं और फिर अब सब दुनिया देख रही है कि वही हुआ जिसका ख़तरा था और यूरोप में भी जंगी हालात पैदा हो हैं।

यूकरेन की वजह से रूस और नेटो (NATO) के देश आमने सामने खड़े हैं। अल्लाह तआला

बेहतर जानता है कि प्रभुत्व अंतत: किसने प्राप्त करना है या दोनों की तरफ़ कितना नुक़्सान होना है लेकिन यह निश्चित बात है कि इस के परिणाम बहुत भयानक होने हैं और अगर अब भी अक़्ल से काम न लिया तो एक भयानक विनाश इसका परिणाम है।

फिर हम देखते हैं कि अब ताइवान का मुआमला भी खड़ा हो गया है और साफ़ ज़ाहिर है कि अब पूरी दुनिया ख़ौफ़नाक जंग के किनारे पर खड़ी है। इस ज़माने के अल्लाह तआला के भेजे हुए ने बड़े ज़ोर से सचेत किया है कि "हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी महफ़ूज़ नहीं और हे जज़ाइर के रहने वालो कोई मस्नूई ख़ुदा तुम्हारी मदद नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादीयों को वीरान पाता हूँ।"(हकीकतुल वह्यी, ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 269)

यही वह आदेश है और चेतावनी है और warning है जिसकी वजह से ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत समय समय पर तवज्जा दिलाते रहे। मैं भी एक अवधि से इस ओर तवज्जा दिला रहा हूँ, यह बता रहा हूँ कि अपने पैदा करने वाले एक ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं करोगे तो तबाही निश्चित है।

मैं एक लंबे समय से बता रहा हूँ कि बलॉक बन रहे हैं और इस का अंतिम परिणाम एक दूसरे की तबाही पर ही होगा, इसलिए होश करो लेकिन अक्सर ये लोग ये बातें सुनते हैं, सुनते थे और अब भी सुनते हैं और कह देते थे कि हालात कुछ ख़राब हैं। ठीक है कि कुछ हद तक ख़राब हैं लेकिन ऐसे भी नहीं जैसे तुम भयानक और निराशाजनक हालात का नक़्शा खींच रहे हो। मुझे भी लोगों ने कहा, हमारी अपनी जमाअत के व्यक्तियों को भी लोगों ने कहा लेकिन अब यही लोग जो इन बातों को सतही नज़र से देखते थे ख़ुद कहने लग गए हैं कि हालात बद से बदतर होते चले जा रहे हैं और अगर यही हालात रहे तो किसी वक़्त भी ख़ौफ़नाक जंग की सूरत हो सकती है।

अब ये बातें उनके थिंक टैंक (think tank) और विश्लेषक आम कहने लग गए हैं लेकिन इसके बावजूद सदैव की शांति स्थापित करने का हल उनके पास नहीं है और यह हो भी कैसे सकता है कि शांति के स्त्रोत की ओर उनकी नज़र नहीं है। दुनिया में डूबे हुए हैं और दीन को भूल चुके हैं।

जहां अमन का हल है वहां न ये ग़ैर मुस्लिम हुकूमतें आना चाहती हैं उनकी ही बदक़िस्मती से मुसलमान हुकूमतें आना चाहती हैं।

अब कुछ जगह विश्लेषक यह भी कह रहे हैं कि जंगों की सूरत में जो तबाही होनी है वह ऐसी ख़ौफ़नाक होगी कि एक अंदाज़े के मुताबिक़ दौरान-ए-जंग और इस के बाद के दो सालों में ऐटमी हथियारों के प्रयोग की वजह से दुनिया की छयासठ फ़ीसद जनसंख्या दुनिया से मिट जाएगी। ऐसी तबाही-ओ-बर्बादी होगी जिसका अनुमान भी कोई नहीं लगा सकता। एक आम इन्सान तो इस का सोच भी नहीं सकता। अत: बहुत ख़ौफ़नाक हालात हैं

ऐसे में यदि कोई उम्मीद की किरण है, शांति स्थापना की गारंटी है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन-ओ-सलामती की तालीम के साथ दुनिया में भेजा था, जो शहनशाह-ए-अमन है, जो अल्लाह तआला को सब इन्सानों से ज़्यादा प्यारा है, जिस पर अल्लाह तआला की आख़िरी कामिल

और मुकम्मल शरीयत उत्तरी, जिसकी तालीम प्यारो मुहब्बत की तालीम है, जिसने अपने ख़ुदा तआला के ताल्लुक़ की वजह से और अपने ऊपर उत्तरी हुई तालीम को दुनिया में फैलाने और दुनिया को तबाही से बचाने की फ़िक्र और इस के लिए शदीद दर्द महसूस करने की वजह से अपनी ज़िंदगी हलकान कर ली थी। इस हद तक अपनी हालत कर ली थी और करब से तड़प कर और रो-रो कर अल्लाह तआला से दुआएं कीं कि अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाया कि لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (अश्शोअरा : 4) क्या तू अपनी जान को इसलिए हलाक कर देगा कि वह मोमिन नहीं होते? अत: यह है वह ज़ात जो दिल में इन्सानियत के लिए दर्द रखती थी कि लोग अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजू करें और तबाही से बच जाएं। अपनी दुनिया भी बचा लें और अपनी आख़िरत भी बचा लें। ऐसी संपूर्ण शिक्षा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाई कि कोई और तालीम उस का मुक़ाबला नहीं कर सकती। ऐसी अमन की ज़मानत दी जो दरअसल अल्लाह तआला की दी हुई ज़मानत है लेकिन अफ़सोस कि मुसलमान भी इस तालीम को भूल गए और ईमान के सिर्फ ज़बानी नारे लगा कर एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हुए हैं और इस के लिए ग़ैरों से मदद के तालिब हैं। कलमा पढ़ने वाले, कलमा पढ़ने वालों को दीन के मुख़ालेफ़ीन की मदद से क़तल कर रहे हैं। इस से ज़्यादा बदक़िस्मती मुसलमानों की और क्या हो सकती है? ऐसी ख़ूबसूरत तालीम और ऐसा दर्द रखने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तिबा का दावा करने के बावजूद अल्लाह तआला की नाराज़गी मोल ले रहे हैं और दुनिया में अमन-ओ-सलामती फैलाने के बजाय बदअमनी फैलाने के हवाले से मशहूर होते चले जा रहे हैं और ये सब इसलिए है कि अल्लाह तआला ने जो इस ज़माने में अमन-ओ-सलामती के बादशाह और अल्लाह तआला के सबसे प्यारे के ग़ुलाम को दुनिया में अमन-ओ-सलामती की तालीम फैलाने के लिए भेजा है इस की बात भी सुनना नहीं चाहते और न सिर्फ बात सुनना नहीं चाहते बल्कि इस हद तक बढ़ गए हैं कि इस पर और इस के मानने वालों पर कुफ्र के फ़तवे लगाने वाले और उनको क़तल करने को इस्लाम की ख़िदमत और ख़ातिमु अंबियाँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुहब्बत का मयार समझते हैं। अहमदियों की ज़िंदगियों से खेलना उनके नज़दीक कार-ए-सवाब है। अत: ऐसे लोग किस तरह इस्लाम की अमन की तालीम को दुनिया में फैला सकते हैं? काश कि ये लोग अक़्ल करें। उनके उलमा उलमाए सू बनने के बजाय अक़्ल-ओ-दानिश फैलाने वाले उलमा बने ताकि उम्मते वाहिदा बन कर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम को दुनिया में फैलाने वाले बन सकें और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के साथ मिलकर दुनिया को हक़ीक़ी अमन-ओ-सलामती का पैग़ाम पहुंचा सकें। बहरहाल यह एक अलग और विस्तार वाला विषय है।

इस वक़्त मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उत्तरी हुई शरीयत,आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अमन-ओ-सलामती फैलाने वाली तालीम के हवाले से अमन-ए-आलम के बारे में कुछ बातें करूँगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा तो इस क़दर वुसअत रखे हुए हैं कि इस का अहाता

थोड़े वक़्त में मुम्किन ही नहीं लेकिन बहरहाल जैसा कि मैंने कहा चंद बातें वर्णन करूँगा।

जमात अहमदिया के बारे में कहा जाता है कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपमान और तिरस्कार करने का पाप करते हैं और उसकी तालीम देते हैं लेकिन हक़ीक़त में हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम पर अमल करने वाले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करने वाले हैं। जमाअत का लिट्रेचर इस बात का गवाह है। हर साल हज़ारों सदस्वभाव लोग इस तालीम और मुहब्बत को देखकर जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में शामिल होते हैं। ग़ैर भी यह कहने पर मजबूर हैं कि इस्लाम की यह तालीम तो ऐसी प्रभावी और मुहब्बत और सलामती फैलाने वाली तालीम है कि यही दुनिया के अमन का आज वाहिद हल है।

अभी कुछ दिन पहले मैं ने यू.के के जलसा सालाना में जमाअत की तरक़्क़ी की रिपोर्ट में और जलसा के तास्सुरात के वाक़ियात में लोगों के वर्णन सुनाए कि किस तरह वे लोग अहमदी माहौल और जलसा के माहौल से प्रभावित हुए और उन्हें इस्लाम की अम्न पसंद तालीम का पता चला। बहरहाल हमारे विरोधी जो भी चाहें सोचें और करें, हमारा काम है कि अगर हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम को अपनाएं और दुनिया में फैलाएं। दुनिया को बताएं कि आज दुनिया की अमन-ओ-सलामती का यही वाहिद हल है। अत: आओ और अमन-ओ-सलामती की तालीम देने वाले इस अज़ीम वजूद से जुड़ कर दुनिया-ओ-आख़िरत में अपनी सलामती के सामान कर लो। यह सिर्फ़ बातें ही नहीं हैं बल्कि जब हम तारीख़ पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि किस तरह इस नबी ने अनपढ़ और जाहिल अरबों को जहालत के अंधेरों से निकाल कर आला अख़लाक़ और इलम-ओ-अमल के मीनारों तक पहुंचा दिया। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"वही रसूल जिसने वहशियों को इन्सान बनाया और इन्सान से बाअख़लाक़ इन्सान। यानी सच्चे और वाक़ई अख़लाक़ के मर्कज़ एतिदाल पर क़ायम किया और फिर बाअख़लाक़ इन्सान से बाख़ुदा होने के इलाही रंग से रंगीन किया।" (मजमूआ इश्तेहारात, भाग 2 पृष्ठ 183)

अत: आप अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों और अपने से मुहब्बत करने वालों को अख़लाक़ और इबादतों के वे गुण सिखाए जिन्हों ने उन्हें ख़ुदा तआला का क़ुरब पाने वाला बना दिया और उनका हर क़ौल-ओ-फ़ेअल ख़ुदा तआला की रज़ा के लिए हो गया। हुक़ूक़ उल-ईबाद की अदायगी भी की तो ख़ुदा तआला का क़ुरब पाने के लिए। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी इन्सान को इस मुक़ाम पर ले जाती है जहां वह अल्लाह तआला से हक़ीक़ी मुहब्बत करने वाला बन जाता है और यह हक़ीक़ी मुहब्बत फिर इन्सान के हर क़ौल-ओ-फ़ेअल को ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने वाला बना देती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी करने वाले के बारे में फ़रमाते हैं कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी करना और आपसे मुहब्बत रखना

अंजाम-कार इन्सान को ख़ुदा का प्यारा बना देता है।"(हकीकतुल वह्यी,रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 67)
अत: यह इन्क़लाब था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के दिलों में पैदा किया कि जो मुशरिक थे वे एकेश्वरवादी बने और ऐसे एकेश्वरवादी बने कि ख़ुदा तआला के प्यारे बन गए। वे ख़ुदा तआला से मुहब्बत करने वाले और ख़ुदा तआला उनसे प्यार करने वाला बन गया। अल्लाह तआला से मुहब्बत करने वालों ने इबादत के भी हक़ अदा किए और ख़ूब अदा किए। अल्लाह तआला की दी हुई तालीम पर अमल शुरू किया और ख़ूब किया और इस के मियार क़ायम किए।
जब किसी से मुहब्बत होती है तो फिर उसके हर क़ौल-ओ-फेअल पर इन्सान अमल करने की कोशिश करता है, उसकी हर बात सुनने और इस को मानने की कोशिश करता है।

ज़बानी मुहब्बत का दावा नहीं करता। अत: जब उन लोगों में ख़ुदा तआला की मुहब्बत पैदा हुई तो ख़ुदा तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा करने की तरफ़ भी तवज्जा पैदा हुई। हुक़ूकुल-ईबाद की बजा आवरी में भी एक दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश करने वाले बनने लगे। और जब यह सूरत-ए-हाल पैदा हो तो फिर आप का मुहब्बत-ओ-प्यार भी लिल्लाह पैदा होता है। दूसरों के हक़ भी ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने के लिए इन्सान अदा करता है और जब ये मयार बन जाएं तो फिर अमन-ओ-सलामती की भी बुनियाद पड़ती है, इस के लिए कोशिश होती है और उसके मयार क़ायम होते हैं।
अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह वजूद हैं जिन्हों ने हमें ख़ुदा तआला से मिलने के रास्ते दिखाए और यही वजूद है जिस पर उत्तरी हुई तालीम पर अमल कर के हम दुनिया में अमन-ओ-सलामती पैदा कर सकते हैं।

हमेशा याद रखना चाहिए कि अमन की बुनियाद घरों से शुरू होती है। फिर मुहल्ले, क़स्बे, शहर, मुल्क और विश्व की सतह तक उस का दायरा बढ़ जाता है। अत: हर सतह पर जब एक दूसरे के जज़बात और हुक़ूक़ का ख़्याल रखा जाता है तो अमन क़ायम होता है और हर तबक़ा की यही तालीम अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया हमें दी। हर वर्ग को ये तालीम दी।
हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस विषय पर मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर वर्णन करते थे लेकिन एक अवसर पर इस मज़मून को वर्णन फ़रमाया-

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अमन-ए-आलम"

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के इस मज़मून से फ़ायदा उठाते हुए, लाभ प्राप्त करते हुए मैं भी इस हवाले से कुछ वर्णन करूँगा।

यह तो हम देखते हैं और समझते हैं कि अमन बड़ी अहम चीज़ है। अमन की बातें होती हैं, हर कोई कहता है अमन बहुत अहम चीज़ है और अमन की हालत ही घर के सुकून और सलामती की भी ज़मानत है और बैनुल अक़वामी सतह पर भी सुकून-ओ-सलामती की ज़मानत है और ख़ाहिश भी रखते हैं कि हर सतह पुर अम्न क़ायम हो लेकिन केवल ख़ाहिश अमन पैदा नहीं कर देती क्योंकि यहां भी अमन की ख़ाहिश ख़ुदग़रज़ी लिए हुए होती है और यही हम दुनिया में देखते हैं।

अगर ख़ुदग़रज़ी न हो तो लड़ाईयां हो ही नहीं सकतीं। सधारणत: जब कोई अमन की बात करता है तो अमन की ख़ाहिश अपने लिए होती है बल्कि उमूमन जब इन्सान दुआ भी करता है और अगर दुआ नहीं भी हो रही तो इन्सान यही कहता है यानी बाज़ दफ़ा ख़ाहिश का इज़हार ज़बान पर भी आ जाता है कि अल्लाह तआला मुझे और मेरे बीवी बच्चों को मेरे क़रीबियों को अमन में रखे। दूसरों के अमन में रहने के लिए यह दर्द नहीं होता या इन्सान अपनी ज़िंदगी सुकून से बसर करने के लिए दौलत चाहता है और उसको अच्छा समझता है तो उसका मतलब यह नहीं कि दुश्मन के लिए भी वह दौलत को अच्छा समझता है बल्कि सिर्फ अपने लिए दौलत को अच्छा समझता है। अगर सेहत को अच्छा समझता है तो इस का मतलब यह नहीं कि दुश्मन के लिए भी अच्छी सेहत चाहता है। दुश्मन के लिए तो यही चाहेगा कि वह नादार हो और कमज़ोर हो ताकि उसको दुश्मन पर फ़ौक़ियत रहे। इसी तरह इज़्ज़त-ओ-मर्तबा अगर लोग चाहते हैं तो अपने लिए, हर शख़्स के लिए नहीं चाहते। ये कभी नहीं चाहेंगे कि दूसरे को भी वही इज़्ज़त-ओ-मर्तबा मिले जो मुझे मिल रहा है। दुनिया में यही नज़ारे हमें नज़र आते हैं आम लोगों में भी और लीडरों में भी। सियासतदानों की आपस की लड़ाईयां और इक़तेदार में आने पर एक दूसरे पर ज़ुलम जो अपने ही मुल्कों में हम देख रहे हैं, एक दूसरे पर जो कर रहे हैं वह इसी सोच का नतीजा है। अत: अगर सिर्फ अमन की ख़ाहिश है तो वह फ़साद का ज़रीया हो सकती है क्योंकि इस में ख़ुदग़रज़ी शामिल है क्योंकि जो लोग अमन चाहते हैं वह इस रंग में अमन के मुतमन्नी हैं कि सिर्फ उन्हें और उनके क़रीबियों को या उनकी क़ौम को अमन हासिल रहे। वर्ना दूसरों के लिए और दुश्मनों के लिए वह यही चाहते हैं कि उनके अमन को मिटा दें। अत: अगर इस उसूल को रायज कर दिया जाए कि अपने लिए और मयार और दूसरे के लिए और तो दुनिया में जो भी अमन क़ायम होगा वह चंद लोगों का अमन होगा, सारी दुनिया का अमन नहीं होगा। और अगर सारी दुनिया का अमन न हो तवज्जो सारी दुनिया की अमन की न हो वह हक़ीक़ी अमन नहीं कहला सकता। हक़ीक़ी अमन तभी होगा जो ज़ाती, ख़ानदानी, नसली, क़ौमी, मुल्की तर्जीहात से बाला हो कर क़ायम करने की कोशिश की जाए, एक मर्कज़ी महवर के हुसूल के लिए किए जाए। और यह उसी सूरत में हो सकता है जब इन्सान इस बात को समझ ले और इस का फ़हम-ओ-इदराक पैदा करले कि मेरे ऊपर एक बाला हस्ती है जो मेरे लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त दुनिया के लिए अमन चाहती है, जो मेरे घर और देश के लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त मुल्कों के लिए अमन चाहती है। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम अमन का नुक़्ता महवर यह एहसास है कि एक बाला हस्ती मुझे देख रही है जिस के लिए मैंने अपने क़ौल-ओ-फ़ेअल को एक करना है। हमेशा इस उसूल पर चलने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए इस सुनहरी उसूल को सामने रखना होगा कि दूसरे के लिए भी वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद हो।

अत: इस उसूल को सामने रखते हुए हमेशा यह सोच रखनी होगी कि अगर मैं सिर्फ अपने लिए या अपनी क़ौम के लिए या सिर्फ अपने देश के लिए अमन का मुतमन्नी हूँ तो इस सूरत में मुझे अल्लाह तआला की मदद, उस की नुसरत और उस की ख़ुशनुदी कभी हासिल नहीं हो सकती।

जब इस अक़ीदे पर इन्सान क़ायम हो जाए कि अल्लाह तआला की ख़ातिर सब कुछ करना है तभी हक़ीक़ी अमन क़ायम हो सकता है वर्ना नहीं।

अत: अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया हमें اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ (अलहश्र : 24) वह बादशाह है। पाक है, दूसरों को पाक करता है। ख़ुद हर एक ऐब से सलामत है, दूसरों को सलामत रखता है। सबको अमन देने वाला है। यह कह कर कि اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ इन्सानी इरादों को पाक साफ़ कर दिया है और ये निश्चित बात है कि जब तक इरादे दरुस्त न हो उस वक़्त तक काम भी दरुस्त नहीं हो सकता। नीयत ही साफ़ न हो तो काम में बरकत किस तरह पड़ सकती है? जब तक इरादे दरुस्त न हों उस वक़्त तक बहरहाल यह याद रखना चाहिए कि कभी भी काम दरुस्त नहीं हो सकता, हो ही नहीं सकता

दुनिया में इस वक़्त जितनी लड़ाईयां और फ़साद हैं वह सब इस वजह से हैं कि इन्सान के इरादे साफ़ नहीं हैं। लोग मुँह से जो बातें करते हैं उनके मुताबिक़ उनकी ख़ाहिशात नहीं और उनकी ख़ाहिशात के मुताबिक़ उनके क़ौल-ओ-फ़ेअल नहीं और दुनिया के इस फ़साद में बड़ी और प्रगति प्राप्त कहलाने वाली क़ौमों का ज़्यादा किरदार है। आज बेशक दुनिया लड़ाई को बुरा कहती है। हर लीडर यही वर्णन कर रहा है कि लड़ाई बुरी चीज़ है लेकिन इस का मतलब सिर्फ यह है कि हमारे ख़िलाफ़ कोई लड़े तो यह बुरी बात है लेकिन अगर उनकी तरफ़ से जंग की इबतेदा हो तो यह कोई बुरी बात नहीं है और यह नुक़्स इस वजह से है कि इन लोगों की नज़र उस हस्ती पर नहीं है जो 'सलाम है और सलामती देने वाली हस्ती है। वह समझते हैं कि जहां तक हमारा फ़ायदा है हम अमन के नारे लगाने पर अमल करेंगे परंतु जब हमारे मुफ़ाद के ख़िलाफ़ बात आएगी तो हम रद्द कर देंगे। हमारे दुश्मन की कोई मदद करे और उसे असलाह दे तो यह किसी सूरत में काबिल-ए-क़बूल नहीं है लेकिन अगर हम किसी को असलाह दें चाहे वह ज़ुलम करने पर ही प्रयोग हो रहा हो तो यह जायज़ है। अगर यह सोच हो तो किस तरह हक़ीक़ी अमन क़ायम हो सकता है।

अत: हक़ीक़ी अमन दुनिया में लाने के लिए यही अक़ीदा और इस पर अमल कारगर होगा कि दुनिया का एक ख़ुदा है जो यह चाहता है कि सब लोग अमन में रहें। और जब यह अक़ीदा होगा, इस पर अमल होगा तो फिर ही इन्सान की ख़ाहिशात ख़ुदग़रज़ी से बाला होंगी बल्कि दुनिया को आम नफ़ा पहुंचाने वाली होंगी और जब यह होगा तो हमारी सोच में और अमन-ओ-सलामती क़ायम करने के और ही मयार होंगे। हम यह नहीं देखेंगे कि फ़ुलां बात का हमें फ़ायदा पहुंचता है या नहीं बल्कि हम ये देखेंगे कि सारी दुनिया पर उसका क्या असर है। दुनिया वाले तो हमेशा अपने फ़ायदे के लिए दूसरों के अमन को बर्बाद करते रहते हैं लेकिन जो यह अक़ीदा रखते हैं कि एक बाला हस्ती है तो वो कभी जुर्रत नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें पता है कि अगर हमने ऐसा किया तो एक बाला हस्ती हमें कुचल कर रख देगी। उद्देश्य यह है कि हक़ीक़ी अमन उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक एक बाला हस्ती को तस्लीम न किया जाए,जब तक उस की मुहब्बत दिल में पैदा न हो। और यह अक़ीदा कि अल्लाह तआला अमन देने वाला

है सिर्फ इस्लाम ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया पेश किया है।

अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो तालीम उतारी इस में फ़रमाया कि قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ - يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ (अलमाइदा : 16-17) यक़ीनन तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आ चुका है और एक रोशन किताब भी। अल्लाह उसके ज़रीया उन्हें जो उसकी रज़ा की पैरवी करें सलामती की राहों की तरफ़ हिदायत देता है। अत: अल्लाह तआला ने तो नूर-ए-हिदायत भेज दिया, एक किताब भी समस्त अहकामात के साथ भेज दी और इस में सलामती की राहों की तरफ़ वाज़ेह हिदायात भी वर्णन कर दीं। अब जो लोग उस की कामिल पैरवी करेंगे वही सलामती की राहों को पाने वाले होंगे। अगर आज मुसलमानों में फ़ित्ना-ओ-फ़साद की कैफ़ीयत है, आपस में जंगों की कैफ़ीयत है तो वाज़िह है कि यह अल्लाह तआला की दी हुई और भेजी हुई किताब और नूर की हक़ीक़ी पैरवी नहीं कर रहे। बेशक दावे हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करते हैं लेकिन अमल उसके ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला का क़ौल तो कभी ग़लत नहीं हो सकता। अल्लाह तआला की बात कभी ग़लत नहीं हो सकती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातें कभी ग़लत नहीं सकतीं।

अगर मुसलमानों में फ़ित्ना-ओ-फ़साद है तो स्पष्ट है कि यह इस किताब को मानने का दावा तो करते हैं परंतु अल्लाह तआला ने इस में जो तालीम उतारी है इस की पैरवी नहीं कर रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का दावा तो है लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा और तालीम पर नहीं।

अत: आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ के मानने वालों का यह काम है कि इस तालीम को अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाएँ। क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात पर अमल करें तो तभी अपने माहौल में सलामती पैदा कर सकते हैं और दुनिया को भी सलामती का पैग़ाम पहुंचा सकते हैं अन्यथा दुनिया कहेगी कि अपने क़ौल-ओ-फ़ेअल एक करो फिर हमें नसीहत करना।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "अब आसमान के नीचे फ़क़त एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो आला व अफ़ज़ल सब नबियों से और उत्तम वा अकमल सब रसूलों से और ख़ातमुल अंबिया और ख़ैरुल नास हैं जिनकी पैरवी से ख़ुदाए तआला मिलता है और ज़ुलमाती पर्दे उठते हैं और इसी जहान में सच्ची नजात के आसार नुमायां होते हैं और क़ुरआन शरीफ़ जो सच्ची और कामिल हिदायतों और तासीरों पर मुश्तमिल है जिसके ज़रीया से हक़्क़ानी उलूम और मआरिफ़ हासिल होते हैं और बशरी आलूदगियों से दिल पाक होता है और इन्सान जहल और ग़फ़लत और शुबहात के हिजाबों से निजात पाकर हक़्कुल्-यक़ीन के मुक़ाम तक पहुंच जाता है।" (बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 557-558 हाशिया दर हाशिया)

अत: अल्लाह तआला ने अपने नूर, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और क़ुरआन-ए-करीम जो रोशन किताब और तमाम उलूम-ओ-मआरिफ़ का स्रोत और हिदायत का नूर है

और सलामती का पैग़ाम है, को भेज कर इन्सानियत पर बहुत बड़ा एहसान किया है। अगर इन्सान इस से फ़ायदा ना उठाए और अपने तबाह करने वाली ख़ुदगरज़ी मुफ़ादात का ही कैदी रहे तो इस से बड़ी बदक़िस्मती और क्या हो सकती है।

अत: अगर अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत संवारनी है, अमन-ओ-सलामती से रहना है तो हमें अल्लाह तआला के इस कलाम को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि يَهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ यह रोशन किताब की हिदायत को हमेशा अपने सामने रखें। इस रोशन किताब की हिदायत को पढ़ना और सामने रखना चाहिए तभी इस्लाम के मार्ग पर चलने वाले होंगे। सलामती के रास्ते पर चलने वाले होंगे। इस किताब का कोई हुक्म भी ऐसा नहीं जो इन्सानी अमन बर्बाद करने वाला है। अत: यह पैग़ाम है जो अपनों और ग़ैरों को देना हमारा काम है आज और यही दुनिया के अमन की ज़मानत है। और यही वह इन्क़लाब था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में पैदा किया और अमली तौर पर ऐसी जमाअत तैयार कर दी जो

اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا

(अल फ़ुरकान : 64) और जब जाहिल उनसे मुख़ातब होते तो कहते सलाम, उसका मिस्दाक़ बना दिया और यही वह हालत है जब हम में पैदा हो जाए और हम दुनिया में पैदा कर दें तो हमारा हाल और हाज़िर भी अमन में होगा और हमारा मुस्तक़बिल भी अमन में होगा। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का यह एक बहुत बड़ा काम है जिन्हों ने अपने घरों और अपने माहौल में भी अमन और सलामती पैदा करनी है और दुनिया में भी अमन-ओ-सलामती पैदा करनी है।

और यह काम उसी वक़्त होगा जब हमारे दिल भी ख़ालिस तौहीद से पुर होंगे और दुनिया को भी हक़ीक़ी तौहीद की तरफ़ लाने वाले होंगे

यह बात निश्चित है कि तौहीद कामिल के क़ियाम के बग़ैर अमन क़ायम हो ही नहीं सकता।

पहले भी वर्णन हो गया कि बाला हस्ती को बहरहाल तस्लीम करना होगा और वह बाला हस्ती अल्लाह तआला की ज़ात है और इस का ख़्याल तौहीद को दिल में क़ायम किए बग़ैर नहीं आ सकता और तौहीद क़ायम नहीं होगी तो लड़ाईयां भी जारी रहेंगी। लड़ाईयां तो तभी बंद हो सकती हैं जब हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा हो, आपस में मुहब्बत और प्यार पैदा हो, भाई चारे की सूरत-ए-हाल पैदा हो।

अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा न हो और हक़ीक़ी मुवाख़ात एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकती,वाहिद-ओ-यगाना ख़ुदा से ताल्लुक़ के बग़ैर पैदा ही नहीं हो सकती। सिर्फ मानना ही नहीं बल्कि एक ताल्लुक़ भी क़ायम करना होगा और उसकी तालीम भी हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया ही मिली है। इसलिए अल्लाह तआला ने اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (अल्फातिहा : 2) की तालीम जब हमें क़ुरआन-ए-करीम में दी तो उसे हर नमाज़ में पढ़ने का हुक्म भी दिया ताकि मुसलमानों में उख़ुवत का वसीअ तसव्वुर क़ायम हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ पढ़ कर ख़ुदा तआला की रबूबियत तमाम आलम पर वसीअ होने का इदराक पैदा होता

है। इन कलिमात को पढ़ कर इन्सान की सोच वसीअ होती है और वह इस ख़ुदा की तारीफ़ करता है जो तमाम दुनिया और जहानों का रब है। जो ईसाइयों का भी रब है, हिंदूओं का भी रब है, यहूदियों का भी रब है और हर एक का रब है। जब ये कलिमात इन्सान पढ़ता है तो फिर किसी से नफ़रत क्योंकर हो सकती है। यही बात मैंने एक दफ़ा अमरीका में ग़ैरों की एक मजलिस में वर्णन की तो वे कहते हैं ये कैसी है! और वाक़ई इस्लाम की तालीम ऐसी है जो कभी एक हक़ीक़ी मुसलमान के दिल में दूसरे के लिए बुग़ज़-ओ-कीना पैदा कर ही नहीं सकती। رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ के शब्दों ने तो सब का अहाता कर लिया है और यही चीज़ सलामती फैलाने के बड़े और वसीअ रास्ते खौलती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ में बता दिया गया कि अगर हक़ीक़ी तौहीद क़ायम हो और रब्बुल अलमीन की हमद से इन्सान की ज़बान तर हो तो ये मुम्किन ही नहीं कि किसी क़ौम का कीना इन्सान के दिल में हो, न ईसाइयों के लिए, न हिंदूओं के लिए, न यहूदियों के लिए। यह किस तरह हो सकता है कि एक तरफ़ तो वह उनकी बर्बादी की ख़ाहिश रखे और दूसरी तरफ़ उनको देखकर अल्लाह तआला की हमद और तारीफ़ भी करे। यह हो ही नहीं सकता। अत: हक़ीक़ी एकेश्वरवादी ही हक़ीक़ी अमन-ओ-सलामती का अलमबरदार है। अगर मुसलमान हक़ीक़त में इस नुक्ता को समझ लें और इस के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को ढालें तो दुनिया में हक़ीक़ी अम्न पसंद यही होंगे लेकिन फिर वही बात कि इस के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के साथ जुड़ना भी ज़रूरी है, तभी इलम-ओ-मार्फ़त का सही इदराक भी हो सकता है।

लेकिन साथ ही में फिर कहूँगा कि यह हम पर भी ज़िम्मेदारी डालता है कि हम अपनी हालतों का जायज़ा लेते रहीं। यह न हो कि हमारा नमाज़ों में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ पढ़ना सिर्फ़ मुँह के अलफ़ाज़ हों और दिल उस की गहराई से ख़ाली हो। अगर दिल-ओ-दिमाग़ उस गहराई से ख़ाली हैं तो हम भी फ़ित्ना-ओ-फ़साद पैदा करने वालों में से होंगे। अमन-ओ-सलामती फैलाने वालों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई तालीम की पैरवी करने वालों में से नहीं होंगे।

अत: बहुत सोचने का मुक़ाम है, बहुत ग़ौर की ज़रूरत है, बहुत फ़िक्र का मुक़ाम है। आज हर अहमदी का काम है कि हक़ीक़ी अमन और सलामती दुनिया में पैदा करने के लिए ख़ुदा-ए-वाहिद पर अपने ईमान को पुख़्ता करे। ख़ुदा तआला की मुहब्बत को अपने दिलों में रासिख़ करे कि कोई और मुहब्बत उसकी जगह न ले सके। इसके हुक्मों पर अमल करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हुई तालीम यानी क़ुरआन-ए-करीम को अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाए। जब हमारे मयार इस हद तक जाऐंगे कि क़ुरआन-ए-करीम का हर हुक्म और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर इरशाद हमारे क़ौल-ओ-फ़ेअल का हिस्सा बन जाएगा तब ही हम दुनिया को इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंचा सकेंगे। उन्हें हक़ीक़ी अमन के गुरु की न सिर्फ तालीम पेश कर के बताएँगे बल्कि अपने अमल से भी सिखाएँगे और यही दुनिया में हक़ीक़ी अमन क़ायम करने का ज़रीया है और यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अमन-ए-आलम का अज़ीम वजूद साबित करने का ज़रीया है। यही इस्लाम पर एतराज़ करने वालों के मुँह-बंद करने का ज़रीया है। बहरहाल आज यह काम मसीह मौऊद की जमाअत के सपुर्द

किया गया है। अगर हमने भी घरेलू सतह से लेकर विश्व की सतह तक उस के मुताबिक़ अपना किरदार अदा न किया तो हमारे अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत नहीं है, न ही हमारी नसलों की अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत है और न ही दुनिया के अमन-ओ-सलामती की कोई ज़मानत है। अल्लाह तआला हमें दुनिया को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ ले जाने का ज़रीया बनाए। अल्लाह तआला अहसन रंग में हमें फ़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

हम अब दुआ करेंगे। दुआ में सब यह भी दुआ करें कि अल्लाह तआला सब जलसे में शामिल होने वालों को जलसा की बरकात का हामिल बनाए और हर एक को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनाए। दुनिया के हालात में जल्द हर तरह से अमन-ओ-सलामती पैदा फ़रमाए ताकि हम अपने जलसे फिर बड़े पैमाने पर और इसी शान से हर किस्म की फ़िकरों से आज़ाद हो कर आयोजित कर सकें और जलसों को अपनी रुहानी और इलमी प्यास बुझाने का ज़रीया बनाएँ और हक़ीक़त में अपनी ज़िंदगियों को इस्लामी तालीम के मुताबिक़ ढालने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला के प्यार और इस के फ़ज़ल को समेटने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ दे। (दुआ करलें दुआ)

दुआ के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया जर्मनी जलसा की जो हाज़िरी है वह पहले सुन लें फिर नारा लगाऐं। कहते हैं जलसा की हमारी कुल हाज़िरी उन्नीस हज़ार सात सौ बयासी है जिसमें महिलाएं नौ हज़ार चार-सौ बयासी और मर्द हज़रात दस हज़ार तीन सौ और इस के इलावा जो दूसरे ज़राए से लोग जलसा सालाना की कार्रवाई देख रहे हैं या सुन रहे हैं उनकी तादाद भी चालीस हज़ार से ऊपर है। अच्छा अब अगला प्रोग्राम जो आपने करना है करें।

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 27 सितंबर 2022 ई.)

★ ★ ★

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : एक दोस्त ने सुन्नत नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकात में सूरत अल् फ़ातिहा के साथ क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ने के बारे में मार्गदर्शन चाहा। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 14 मार्च 2019 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : हदीसों में जिस तरह फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रकात में सूरः फ़ातिहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ने के विषय में विवरण पाया जाता है। इस तरह हदीसों और विशेषता सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में यह कहीं वज़ाहत नहीं मिलती कि सुन्नतों की चारों रकात में सूरत अल् फ़ातिहा के साथ क़ुरआन का कुछ हिस्सा ज़रूर पढ़ा जाए।

फ़ुक़हा का भी इस बारे में मतभेद है। इस लिए मालकी और हनबली मसलक वाले सुन्नतों की समस्त रकात में सूरः फ़ातिहा के साथ क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ते हैं जबकि हनफ़ी और शाफ़ी तीसरी और चौथी रकात में सूरः फ़ातिहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कोई हिस्सा नहीं पढ़ते।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला के निकट इस विषय में फ़र्ज़ और सुन्नत नमाज़ में कोई अंतर नहीं। जिस तरह फ़र्ज़ नमाज़ों की केवल पहली दो रकात में सूरः फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ा जाता है इसी तरह सुन्नत नमाज़ों की भी केवल पहली दो रकात में ही सूरः फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ा जाएगा और तीसरी और चौथी रकात में केवल सूरः फ़ातेहा पर ही संतुष्टि की जाएगा और यही मेरा मत है।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में हाल ही में किसी मुल्क में पत्थरों से मार-मार कर मार डालने की सज़ा के लागू करने का वर्णन कर के पूछा है कि क्या इस ज़माना में भी पत्थरों से मार-मार कर मार डालने की सज़ा को लागू किया जा सकता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 14 मार्च 2019 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : इस्लाम की तालीमात जिस में सज़ाएं भी शामिल हैं, किसी ज़माना या मुल्क के साथ विशेष नहीं बल्कि आलमगीर और शाश्वत हैं। लेकिन इस्लामी सज़ाओं के बारे में यह बात हमेशा सामने रहनी चाहिए कि उनके साधारणतया दो पहलू हैं एक सख्त सज़ा और एक अपेक्षाकृत कम सज़ा और उन सज़ाओं का बुनियादी उद्देश्य बुराई की रोक-थाम और दूसरों के लिए सबक सिखाने का उपाय करना है।

अतः यदि व्यभिचार दोनों पक्षों की आपसी सहमति से हो और वे इस्लामी गवाही के तरीक़ा के साथ साबित हो जाए तो दोनों को सौ कोड़ों की सज़ा का आदेश है। लेकिन जिस व्यभिचार में ज़बरदस्ती की जाए और

उस में निहायत वहशियाना मज़ालिम की भावना पाई जाती हो। या कोई व्यभिचारी छोटे बच्चों को अपने ज़ुल्मों का निशाना बनाते हुए इस घिनौनी हरकत का मुर्तक़िब हुआ हो तो ऐसे व्यभिचारी की सज़ा केवल सौ कोड़े तो नहीं हो सकती। ऐसे व्यभिचारी को फिर क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल् मायदा आयत 34 और सूरत अल् अहज़ाब की आयत 61 से 63 में वर्णित शिक्षा की दृष्टि से क़तल और संगसारी जैसी सख्त सज़ा भी दी जा सकती है। लेकिन इस सज़ा का निर्णय करने का अधिकार हुकूमत-ए-वक़्त को दिया गया है और इस तालीम के माध्यम से उमूमी तौर पर हुकूमत-ए-वक़्त के लिए एक रास्ता खोल दिया गया।

प्रश्न : एक दोस्त ने एक वक़्त में दी जाने वाली तीन तलाक़ों, ग़ुस्सा की हालत में दी जाने वाली तलाक़ और तलाक़ के लिए गवाही के मसायल के विषय में कुछ इस्तिफ़सार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 01 जून 2019 में इन प्रश्नों का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को पूरे होश-ओ-हवास से तलाक़ दे तो तलाक़ चाहे ज़बानी हो या तहरीरी, हर दो सूरत में प्रभावी होगी। जबकि एक नशिस्त में तीन बार दी जाने वाली तलाक़ केवल एक ही तलाक़ शुमार होती है। इस लिए पुस्तकों हदीसों में हज़रत रूकाना बिन अबद यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िया मिलता है कि उन्होंने अपनी पत्नी को एक वक़्त में तीन तलाक़ें दे दीं जिसका उन्हें बाद में अफ़सोस हुआ। जब मामला आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस तरह एक तलाक़ होती है यदि तुम चाहो तो रुजू कर सकते हो इस लिए उन्होंने अपनी तलाक़ से रुजू कर लिया और फिर उस पत्नी को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना ख़िलाफ़त में दूसरी और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना ख़िलाफ़त में तीसरी तलाक़ दी। (सुनन अबी दाऊद)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं : "तलाक़ एक वक़्त में कामिल नहीं हो सकती। तलाक़ में तीन तुहर (माहवारी से पवित्रता) होने ज़रूरी हैं। फ़ुक़हा ने एक ही स्थान पर तीन तलाक़ दे देनी जायज़ रखी है परन्तु साथ ही इस में यह रियायत भी है कि इद्दत के बाद यदि पति रुजू करना चाहे तो वह महिला उसी पति से निकाह कर सकती है और दूसरे व्यक्ति से भी कर सकती है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग पंचम, पृष्ठ 17 प्रकाशन 2016 ई.)

इसी तरह जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक़ देता है तो उस की किसी नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त और फ़ुज़ूल हरकत पर नाराज़ हो कर यह क़दम उठाता है। पत्नी से ख़ुश हो कर तो कोई इन्सान अपनी पत्नी को तलाक़ नहीं देता। इसलिए ऐसे ग़ुस्सा की हालत में दी जाने वाली तलाक़ भी प्रभावी होगी। जबकि यदि कोई इन्सान ऐसे तैश में था कि इस पर जुनून की कैफ़ीयत तारी थी और उसने परिणामों पर ग़ौर किए बग़ैर जल्द-बाज़ी में अपनी पत्नी को तलाक़ दी और फिर उस जुनून की कैफ़ीयत के ख़त्म होने पर नादिम हुआ और उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ तो उसी किस्म की कैफ़ीयत के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने फ़रमाया है कि

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ

(अल् बक़रा : 226) अर्थात अल्लाह तुम्हारी कस्मों में (से) व्यर्थ (कस्मों) पर तुमसे पूछताछ नहीं करेगा। हाँ जो (गुनाह) तुम्हारे दिलों ने (इरादे से) कमाया इस पर तुमसे पूछताछ करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बुर्दबार है।

जहां तक तलाक़ के लिए गवाही का मसला है तो यह इसलिए है कि झगड़े की सूरत में निर्णय करने में आसानी रहे। लेकिन यदि पति पत्नी तलाक़ के इजरा पर सहमत हों और उनमें कोई मतभेद न हो तो फिर गवाही के बग़ैर भी ऐसी तलाक़ प्रभावी शुमार होगी। अत: तलाक़ के लिए गवाही का होना मुस्तहब है लाज़िमी नहीं। इस लिए क़ुरआन-ए-करीम ने तलाक़ और रुजू के सिलसिला में जहां गवाही का वर्णन किया है वहां उसे नसीहत क़रार दिया है। जैसा कि फ़रमाया :

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّ اَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَ اَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا

(तलाक़ : 3) अर्थात फिर जब महिलाएं इद्दत की आख़िरी हद को पहुंच जाएं तो उन्हें मुनासिब तरीक़ पर रोक लो या उन्हें मुनासिब तरीक़ पर फ़ारिग़ कर दो। और अपने में से दो मुंसिफ़ गवाह निर्धारित करो। और ख़ुदा के लिए सच्ची गवाही दो। तुम में से जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाता है इस को यह नसीहत की जाती है और जो व्यक्ति अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करेगा अल्लाह उसके लिए कोई न कोई रस्ता निकाल देगा।

इस लिए फ़ुक़हा अर्बा भी इस बात पर सहमत हैं कि यदि कोई व्यक्ति बग़ैर गवाहों के तलाक़ दे दे या रुजू कर ले तो उस की तलाक़ या रुजू पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

प्रश्न - एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत-ए-अक़्दस में क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत के बाद "صَدَقَ اللّٰهُ العَظِيْم" के शब्द पढ़ने के बारे में अपनी राय का इज़हार कर के मार्गदर्शन चाहा, इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 11 जून 2019 में निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : मैंने इस बारे में तहक़ीक़ करवाई है। उलमा में दोनों किस्म के नुक़्ता-ए-नज़र पाए जाते हैं। जो उस के जवाज़ के क़ायल हैं उन्होंने कुछ क़ुरआन की आयात और हदीसों से इस्तिदलाल करके उसके जवाज़ की राह निकाली है।

मेरे निकट भी यदि कोई तिलावत करने के बाद ये शब्द पढ़ ले तो इस में कोई हर्ज की बात नहीं। क्योंकि इस में कोई बुराई तो बहरहाल नहीं बल्कि अल्लाह तआला के कलाम के सच्चा होने की तसदीक़ की जा रही है। लेकिन इन शब्दों का मतलब जाने बग़ैर केवल एक रस्म के तौर पर उन्हें दोहरा देना एक बेईमानी काम

शुमार होगा।

प्रश्न : एक दोस्त ने यात्री के लिए रमज़ान के रोज़ों की रुख़स्त के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के कुछ इर्शादात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत-ए-अक़्दस में पेश कर के उनकी बाहम ततबीक़ के विषय में मार्गदर्शन चाहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 11 जून 2019 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप के पत्र में वर्णन दोनों किस्म के इर्शादात में कोई मतभेद नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों ही का क़ुरआन-ए-करीम के स्पष्ट आदेश की रोशनी में यही इरशाद है कि यात्री और मरीज़ को रोज़ा नहीं रखना चाहिए। और यदि कोई व्यक्ति बीमारी में या सफ़र की हालत में रोज़ा रखता है तो वह ख़ुदा तआला के स्पष्ट आदेश की ना-फ़रमानी करता है।

जहां तक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद "रोज़े में सफ़र है। सफ़र में रोज़ा नहीं" का सम्बन्ध है तो यदि इस सारे ख़ुतबा को ग़ौर से पढ़ा जाए तो बात स्पष्ट हो जाती है कि हुज़ूर दरअसल इस में अलग मिसालें वर्णन करके समझा रहे हैं कि ऐसा सफ़र जो बाक़ायदा तैयारी के साथ, सामान-ए-सफ़र बांध कर, सफ़र की नीयत से किया जाए वह सफ़र ख़ाह छोटा ही क्यों न हो उस में शरीयत रोज़ा रखने से मना करती है। लेकिन ऐसा सफ़र जो सैर के उद्देश्य से किसी trip और enjoyment के लिए किया जाए, वह रोज़े के लिहाज़ से सफ़र शुमार नहीं होगा और इस में रोज़ा रखा जाएगा। इस लिए सफ़र में रोज़ा रखने के बारे में आपके अन्य इर्शादात भी आपके इसी दृष्टिकोण की ताईद करते हैं।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार भिजवाया कि क्या लड़की अपने निकाह के अवसर पर ख़ुद ईजाब-ओ-क़बूल कर सकती है, तथा यह कि ऐलान निकाह के अवसर पर हक़ महर का वर्णन करना ज़रूरी है? हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 22 जुलाई 2019 में इस का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में जहां मुसलमान मर्दों को मोमिन महिलाओं के साथ और मुसलमान महिलाओं को मोमिन मर्दों के साथ निकाह करने का आदेश दिया है वहां अल्लाह तआला ने पुरुष और महिलाओं दोनों के लिए अलग अलग शब्द इस्तिमाल किए हैं। इस लिए मर्दों के लिए फ़रमाया وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ कि तुम मुशरिक महिलाओं से निकाह न करो और महिलाओं के लिए फ़रमाया وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ कि तुम (अपनी लड़कीयां) मुशरिक मर्दों से न ब्याहा करो। मानो इस आयत में अल्लाह तआला ने महिलाओं के वलियों पर उनके निकाह के आयोजित करने की ज़िम्मेदारी डाली है। इसी लिए ऐलान निकाह के अवसर पर लड़की की तरफ़ से इस का वली ईजाब-ओ-क़बूल करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस अमर की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाते हैं :

"महिला स्वयं निकाह के तोड़ने की मजाज़ नहीं है जैसा कि वह ख़ुद बख़ुद निकाह करने की मजाज़ नहीं बल्कि हाकिम-ए-वक़्त के माध्यम से निकाह को तोड़ा जा सकता है जैसा कि वली के माध्यम से निकाह को करा सकती है।" (आर्य धर्म पृष्ठ 32 रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 37)

अत: ऐलान-ए-निकाह में ईजाब-ओ-क़बूल के वक़्त लड़की की तरफ़ से उस का वली यह ज़िम्मेदारी अदा करेगा और यही जमाअती रिवायत है।

जहां तक ऐलान-ए-निकाह में हक़ महर के वर्णन की बात है तो यह ज़रूरी नहीं, क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात के अनुसार हक़ महर के चयन के बग़ैर भी निकाह हो सकता है जैसा कि फ़रमाया: لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖ وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَ عَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ (सूरत अल् बकर : 237) अर्थात तुम पर कोई गुनाह नहीं यदि तुम महिलाओं को उस वक़्त भी तलाक़ दे दो जबकि तुमने उनको छूआ तक न हो या महर न निर्धारित किया हो। और (चाहिए कि इस सूरत में) तुम उन्हें मुनासिब तौर पर कुछ सामान दे दो (ये अमर) दौलतमंद पर उस की ताक़त के अनुसार (लाज़िम है) और नादार पर उसकी ताक़त के अनुसार (हमने ऐसा करना) नेकोकारों पर वाजिब (कर) दिया है।

प्रश्न : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के साथ नैशनल मज्लिस-ए-आमला स्वीडन की virtual मुलाक़ात तिथि 29 अगस्त 2020 ई. में हुज़ूर अनवर ने इस मुलाक़ात से एक दिन पहले इस्लाम मुख़ालिफ़ ग्रुप की तरफ़ से स्वीडन में क़ुरआन-ए-करीम के नुस्ख़ा को जलाने की निंदा की, उस की वजह और इस पर एक अहमदी मुसलमान की प्रतिक्रिया के बारे में मार्गदर्शन करते हुए फ़रमाया कि यहां तो सुना है कि कल रात झगड़े भी हुए हैं, इस का असर तो आप के शहर के क्षेत्र में नहीं है? आदरणीय अमीर साहिब स्वीडन के उत्तर पर कि रात को ये झगड़े हुए थे लेकिन अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हालात ठीक हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

अब यह जो इस्लाम के बारे में misconception है, इस को आपने ही दूर करना है। यह जो व्यक्ति खड़ा हुआ है कि मैं क़ुरआन जला दूंगा। और उसको ठीक है पुलिस ने नहीं आज्ञा दी लेकिन साथ ही उसे यह भी कह दिया कि उसे अपील का right है, वह अपील कर सकता है। और कुछ उस के जो followers थे या उसके ग्रुप के लोग थे, उन्होंने पार्क में जा कर कल रात को क़ुरआन-ए-करीम जला भी दिया। तो यह क्यों हो रहा है? इसलिए कि उन्हें पता ही नहीं है कि इस्लाम की तालीम क्या है, क़ुरआन-ए-करीम की तालीम क्या है। और इसलिए कि मुसलमानों के जो दहश्तगर्द अमल हैं वे उनको यही बताते हैं कि हाँ यह शायद क़ुरआन में ही होगा। वे एक आयत को तो पकड़ लेते हैं कि क़िताल करो या जंग करो। जो अन्य दूसरे आदेश हैं कि किन हालात में करो, उसका उन लोगों को कुछ नहीं पता। तो ये चीज़ें उन लोगों को पता होनी चाहिऐं। इस लिहाज़ से भी आप plan करें। (शेष...)

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ (النحل 12)

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan

Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "इन सब बातों के पश्चात मैं फिर कहता हूं कि यह मत सोचो कि हमने प्रत्यक्ष रूप से बैअत कर ली है। प्रत्यक्ष कुछ नहीं ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे दिलों पर है और उसी के अनुसार तुमसे व्यवहार करेगा। देखो, मैं यह कहकर प्रचार के कर्तव्य से निश्चिन्त होता हूं कि पाप एक विष है इसको मत खाओ। ख़ुदा की आज्ञा का पालन न करना एक घृणित मृत्यु है, उससे बचो। प्रार्थना करो ताकि तुम्हें शक्ति प्राप्त हो। जो मनुष्य प्रार्थना के समय ख़ुदा को हर एक बात पर सर्व शक्तिमान नहीं समझता सिवाए उसके वायदों के अपवाद के, वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो व्यक्ति झूठ और धोखाधड़ी को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो मनुष्य संसार के मोह में फंसा हुआ है, और आख़िरत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य वास्तव में दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिकता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पूर्ण रूपेण प्रत्येक बुराई और प्रत्येक दुष्कर्म अर्थात् मदिरा, जुआ, बुरी दृष्टि, ख़यानत, रिश्वत और प्रत्येक अनुचित व्यवहार से तौबा नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य प्रतिदिन पांचों समय की नमाज़ को अपने जीवन की दिनचर्या नहीं बनाता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुआ (प्रार्थना) में निरंतर लगा नहीं रहता और शालीनता से ख़ुदा का स्मरण नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुष्ट साथी को नहीं छोड़ता जो उस पर दुष्प्रभाव डालता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने माता-पिता का आदर सम्मान नहीं करता और पुण्यादेशों में जो क़ुर्आनी शिक्षा के विरोधी नहीं, उन की आज्ञा का पालन नहीं करता और उनकी सेवा के कर्तव्य से लापरवाह है वह मेरी जमाअत में से नहीं है।" (पुस्तक: कश्ती नूह)